सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | नवम्बर-दिसम्बर, 2011

'क्रिसमस यात्रा'

'राजा हेरोदेस के दिनों में जब यहूदिया के बेतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व दिशा से ज्योतिषी यरूशलेम में पहुँच कर पूछने लगे, 'यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ, कहाँ है ? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है, और उसको दण्डवत् करने आये हैं। (मत्ती 2:1,2)।'

इन लोगों ने एक तारा देखा और यह समझा कि वह यीशु के जन्म का संकेत दे रहा था। इसपर उन्होंने पूर्व से पश्चिम की ओर अपनी यात्रा शुरू कर दी। वह आसान यात्रा नहीं थी। उद्धारकर्त्ता की खोज में वह अपने देश से बाहर जा रहे थे। कई लोग यह कहते हैं कि 'मसीह धर्म' तो पश्चिमी धर्म है, हमारा तो अपना ही धर्म है। लेकिन ये ज्ञानी तो सत्य की खोज में किसी भी जगह जाने को तैयार थे। हर समझदार व्यक्ति सत्य की खोज में यात्रा करने को तैयार रहता है।

हम सभी यह जानते हैं कि यीशु उद्धारकर्त्ता है। लेकिन हम में से कितने ऐसे है, जिन्होंने उसे देखने के लिए यात्रा की ? और उसे देखा है और

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

STAR UTSAV

चैनल पर

*हर **शनिवार सुबह 7:30** से **8:00** बजे*

क्रिसमस – यीशु मसीह का जन्म

क्रिसमस के लिए हम अपने दिलों को तैयार करें। पूरे मन से आराधना करने के लिए हम अपने दिलों को तालमेल में लाएँ। "अब मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हुई, तो उनके समागम से पूर्व ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। " (मत्ती 1 :18) क्रिसमस की कहानी का परिचय हम यहाँ देखते है। मत्ती रचित सुसमाचार का पहला अध्याय यूसुफ की विशेषता पर केन्द्रित है, हाँलाकि यहाँ मरियम के बारे में भी जिक्र किया गया है। इस बारे में हम देखते हैं कि यूसुफ को कैसे तैयार किया गया और किस तरह वह अध्यात्मिक ऊँचाइयों पर उठता गया

यूसुफ परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था और उसका मन एक महान प्रकाशन के लिए तैयार किया गया था। मुझे पता नहीं कि परमेश्वर कितना समय से उसको तैयार कर रहे थे। यूसुफ की प्रारंभिक तैयारियों के बारे में हम कुछ जानकारी नहीं पाते। मगर इस नौजवान को देख मुझे ताजुब होता है। जब उसको पता चला कि उसकी मंगेतर गर्भवती है, उसको बहुत गहरा धक्का पहुँचा।

यूसुफ में हम एक सुन्दर चरित्र पाते है। वह एक बहुत बड़ी उलझन में था। वह अपने आप से शायद कहता होगा: "अब मैं क्या करूँ ? कितनी बड़ी मुसीबत मुझ पर आ पड़ी है। ठीक है, मैं अपनी मंगनी को तोड़ता हूँ। और उसको छोड़ देता हूँ। " मगर उस में परमेश्वर का प्रकाशन पाने की क्षमता थी।

आज दुनिया शक से भरा है। शादीशुदा आदमी-औरतें भी शक से भरे है। अविश्वास से भरा हृदय ? आज यह नौजवानों का लक्षण बन गया है। वे अपवित्र जीवन से अपनी शुरुआत करते हैं जिस के कारण , शादी के बाद, उनके मन पर शक हावी रहता है। फिल्मों और उनके कामुक संभोगों को अपने मन को सिखाते है। इस कारण उनके वैवाहिक जीवन में सुख और आनंन्द नहीं है।

मगर युसुफ में स्वर्ग से तालमेल में रहने की क्षमता थी। वह परमेश्वर को सुन सकता था। आखिरकार यहीं तो धर्म है – परमेश्वर को सुनना। गायक-वृन्द के कुछ लोग क्रिसमस के लिए अपने गानों का अभ्यास करने और अपने दोस्तों के साथ हँसी मजाक करने में इतने व्यस्त होंगे कि परमेश्वर के लिए उनके पास समय नहीं है। मैं ये तो नहीं कहता कि आपको अभ्यास नहीं करना चाहिए। परमेश्वर की स्तुति सही ताल मेल से करनी चाहिए। अगर आप बेसुर गाते हो तो आप परमेश्वर से माँगे की वह आप के गले को स्पर्श करें। मगर यह मत भूलना कि पहले जो आवश्यक है वह है परमेश्वर की वाणी को सुनना। कुछ लोगों में यह क्षमता बिलकुल नहीं है। इस कारण, उनके लिए क्रिसमस सिर्फ पेट तक ही सीमित है। वे परमेश्वर के साथ तालमेल में नहीं है। हम सब कई उलझनों और मुश्किल परिस्थितियों का सामना करनेवाले है। कई बार मुझे मर्गदर्शन के लिए परमेश्वर की ओर देखना पड़ता है। कई बार, उनका निर्देशन पाने के लिए मुझे बहुत समय प्रार्थना में बिताना पड़ता है। मगर यह

सही नहीं है। हम परमेश्वर के इतने निकट रहें कि उनका निर्देश हमें नियमित रूप से मिलता रहे। तब हमारी जिन्दगियों में कुछ बारबाद नहीं होगा। अगर आपके पिताजी, परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति हैं और आपका यह अनुभव नहीं है तो आप अपने पिताजी का कहना माने। माता-पिता यह जान लें कि अपने बच्चों की अगुवाई करना एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। हम यह जरूर याद रखे कि हम कई दफा लोगों के बारे में गलत अनुमान लगाते हैं। परमेश्वर की चुनी हुई कुवारी मरियम के बारे में, यूसुफ गलत समझ रहा था। इस संसार के सब से महत्वपूर्ण जन्म को वह सिर्फ भौतिक स्तर पर ही अन्दाजा लगा रहा था।

आपके पारिवारिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए परमेश्वर का प्रकाशन पाना आवश्यक है। नहीं तो आप इस विशाल सागर में खो जाओगे। परमेश्वर की महान योजना से बिछड़ने के, यूसुफ कितना निकट आया था। "अब मैं उससे कुछ ताल्लुक नहीं रखना चाहता। " वह अपने आप से कह रहा था। मगर परमेश्वर ने कहा, "ठहरो, तुम्हारा भय अनुचित है। यूसुफ, मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर।"

हम में से कईयों के बारे में कौन सी बात सच है। हम खच्चर की तरह हठी है। हम परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध लगातार लड़ते जा रहें है और कभी रुकते नहीं। परमेश्वर की इच्छा के विरोध में लड़ने का क्या प्रयोजन है ? परमेश्वर के मन में आपके लिए उच्च योजना है। अगर आप, परमेश्वर के द्वारा अगुवाई पाने के लिए तैयार नहीं है, तो आपका जीवन आँसुओं से भर जायेगा। अगर आप, परमेश्वर से निर्देशन पाकर आगे बढ़ते हैं तो आप को कोई डर नहीं होगा। हम अपने निर्णयों में बहुत गलत हो सकते है। दुष्टता से भरे हृदय में शक बार-बार पैदा होता है। एक विशुद्ध लड़की से आप विवाह करते हो, फिर भी आप उस पर विश्वास नहीं कर पाते हो, तो इसका मतलब है कि आपने खुद एक बेईमान जीवन जिया है।

परमेश्वर के निर्देशन के प्रति यूसुफ की क्या प्रतिक्रिया रही? वह शादी करने में आगे बढ़ा और उसके पास तब तक नही गया जब तक वह पुत्र न जनी। अद्‌भुत! क्या यूसुफ जैसा चरित्र सिर्फ बाइबल में ही रहें? नहीं, हमारे बीच भी ऐसे आदमी हो। क्या परमेश्वर का प्रकाशन मुनष्यों तक पहुँचना बन्द हो गया है? नही, परमेश्वर चाहते है कि वह आप से बात करें। वह संपूर्ण सत्य में आपकी अगुवाई करना चाहते है। सारे उलझनों और डर से वे आपको मुक्त करना चाहते है। वह आपके घर में शान्ति लाना चाहते है।

यूसुफ की उलझन के लिए कोई मानवीय हल नहीं है। कोई भी उसको सही निर्णय लेने में मार्गदर्शन नही कर पाया होगा।प्रकाशन जरूरी था। प्रकाशन के बिना हर एक गुमराह है। "क्या आप परमेश्वर को आपने से बात करने दोगे और आपके अनन्त संदेह का अन्त करने दोगे?"

क्रिसमस यात्रा'... पृष्ठ 1 से

उसकी अराधना की है ? किसी ने हमसे कहा और हमने विश्वास कर लिया कि यीशु उद्धारकर्त्ता है। लेकिन हम कभी उसकी उपस्थिति में नहीं गये। जब तुम उसकी उपस्थिति में जाते हो, तुम बदल हो जाते हो। इन ज्ञानियों ने नदियाँ और पहाड़ पार किये। वे धनी व्यक्ति थे। चाहते तो आराम और सुविधा से अपने घर पर ही रह जाते।

क्या तुमने यीशु को देखने के लिए यात्रा की है ? अपनी किशोरावस्था के दिनों में, विद्यार्थियों की सभा में भाग लेने और यीशु की अराधना करने के लिए मैंने लम्बी यात्राएँ कीं। इन ज्ञानियों ने यात्रा आरम्भ की। इसका अर्थ है, ये अपने देश से बाहर गए, अपने परिवार से और साथ ही पैसे भी ख़र्च किये। कुछ कहते हैं, 'क्या मैं यहीं रह कर यीशु को नहीं पा सकता?' हवा तो सर्वत्र विद्‌मान है, फिर भी हम सायकिल ट्यूब और फुटबॉल में हवा भरते हैं। हमें ऐसे स्थान पर जाना चाहिए, जहाँ पर आत्मिक वातावरण की बहुतायत हो।

ज्ञानियों ने ऊँटों पर यात्रा की। ऊँट, नदियाँ सुगमता से पार कर लेते है। वे अपना संतुलन रखते हुए पहाड़ पर चढ़ जाते हैं और समतल भूमि पर भी चलते है। वह रास्ते पर स्थिर होकर चलते हैं। पहाड़ तो घमंड का सूचक है। कभी-कभी हम ऐसा सोचते हैं कि प्रार्थना करना तो व्यर्थ है, यह तो समय की बरबादी है। लेकिन जब हम बीमार पड़ते हैं तो हम परमेश्वर और उसके जनों को याद करते हैं। इससे पहले कि ऐसी स्थिति हमारे ऊपर आ पड़े, हमें पूरे मन से प्रार्थना में लगे रहना चाहिए। क्या तुमने अपनी यात्रा आरंभ की है?

कइयों ने अपनी यात्रा आरंभ की, लेकिन परमेश्वर को आसानी से प्राप्त नहीं किया। संत अगस्तिन जल्द ही धर्मी नहीं बनना चाहता था। वह बार-बार पाप में पड़कर जीवन बिता रहा था। वह कुछ समय तक एक ऐसी स्त्री के साथ रहा जो उसकी पत्नी नहीं थी। उसकी माँ उसके लिए प्रार्थना करती रही। वह पहली औरत को छोड़ दूसरी के साथ रहने लगा। वह यों कहता, 'आज नहीं, कल मैं

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

परमेश्वर की आज्ञा मानूँगा।' लेकिन एक दिन ऐसा आया, उसने पुकार कर कहा, 'प्रभु कल नहीं, लेकिन आज ही, अभी इसी समय, इसी क्षण में तुम्हे पाना चाहता हूँ।'

क्या तुम यह बता सकते हो कि तुम यीशु से कब मिले ? क्या तुम अपने बच्चों को बता सकते हो कि कब तुम उससे मिले थे ? जब मैंने उसे खोजा, तो वह संपत्ति जिसकी मुझे आवश्यकता थी मैंने उसमें (प्रभु यीशु में) पा ली। प्रभु यीशु में मैं आनंद को पाता हूँ, अच्छे स्वास्थ्य को उसमें पाता हूँ। वह मुझे भविष्य में आने वाले समय के लिए सावधान करता है। उसने मुझे सिखाया। जिस समय से मैंने उसे जाना, उन्होंने मुझे सँभाला। यदि मैं गिरता हूँ तो उनके सम्मुख अपनी गलती कबूल करता हूँ। मैं यह पाता हूँ कि वह हमेशा मेरे साथ है।

जब यह ज्ञानी लोग यरूशलेम पहुँचे तो इस पैदा हुए राजा के बारे में पूछताछ की। वहाँ के यहूदी तो इसी में तल्लीन थे कि क्या खाएँ, क्या ओढ़ें। इस कारण उन्हें इन ज्ञानियों के प्रश्न पर बड़ा अश्चर्य हुआ 'राजा कहाँ है?' हेरोदेस तो हत्यारा था। उसने अपनी माँ, पत्नी, अपने दो बेटों और याजक जो उसका संबंधी था, हत्या कर दी थी। हेरोदस व्याकुल हो उठा। यरूशलेम से कोई भी इस नवजात शिशु को देखने नहीं आया। यहूदी यह जानते थे कि उद्धारकर्त्ता का जन्म होने वाला है, फिर भी वह इन ज्ञानियों के साथ नहीं आये। तो ज्ञानियों ने दुबारा तारे को देखा और वह उन्हें बैतलहम ले आया।

'हम उसकी आराधना करना चाहते हैं। इन ज्ञानियों की यही पुकार थी। तुम्हारी पुकार होनी चाहिए। 'मुझे भोजन और आराम नही चाहिए। मुझे केवल यीशु चाहिए।' ज्ञानियों ने मेहनत की और यीशु को पाया। उन्होंने उसकी स्तुति की। उनका हृदय खुशी से भर गया। वह नया अनुग्रह था।

एक ज्ञानी सोना लाया और यीशु की आराधना की। मरियम के लिए सोना आभूषणों के बनाने के लिए आवश्यक नहीं था। लेकिन मिस्र की यात्रा के लिए उसकी आवश्यकता थी। दूसरे अन्य भेंट लाये। आओ हम भी उसकी आराधना करें।

क्रिसमस इवान्स – वेल्स का एक आंखवाला प्रेरित

"क्रिसमस के दिन जन्मा !!" किसान पिता ने ऊँची आवाज में कहा। "ओह हो, हमारे पास उसको एक नाम देने के अलावा ज्यादा कुछ नहीं है। और वह नाम क्या होगा?"

जोहन्ना इवान्स की आंखें कोमलता से नवजात शिशु की ओर मुड़ी जो अपनी माँ के सट कर लटा था। "अच्छा, उसका जन्म क्रिसमस के दिन हुआ इसलिये उसका नाम क्रिसमस रखना चाहिये," उसकी माँ ने सरलता से कहा।

उसका जन्म 1677 – में हुआ था। बाद में उस लड़के को 'जंगली वेल्स का प्रेरित' के नाम से लोग जानने लगे। क्रिसमस इवान्स को अपने आरम्भिक दिनों में बहुत ही दुःखद, परिस्थितियों और दुःखपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ा। अपने पिता की मृत्यु के बाद उसे अपने क्रूर चाचा के पास रहना पड़ा। तब उसे एक नौकर की तरह खेतों में काम करना पड़ा जिससे उसे खाने के लिएभोजन मिल सके। उसे एक झगड़े के दौरान चाकू मार दिया गया। उसे एक बार डूबने से बचाया गया। वह एक पेड़ से गिरा जब कि उसके हाथ में खुला चाकू था। एक घोड़ा जिस पर वह सवार था वह तेजी से दौड़ने लगा और एक नीची सकरी जगह से होकर भागा और उसे जख्मी कर दिया।

अठारह वर्ष की उम्र में वह एक भी शब्द नहीं पढ़ना जानता था। पर वह जानता था कि वह पापी था और परमात्मा के विधान के अनुसार वह नरक में जाएगा। जब कार्डिगनशायर में जवानों के बीच आत्मिक जागृति की लहर आयी इस बेघर लड़के ने ख्रीष्ट यीशु में आश्रय पाया।

जहाँ वह आराधना करने जाया करता था, वहाँ वेल्स के गाँव वासियों से उसने कहा, "मैं ज़रूर बाइबल पढ़ूँगा, "। उन्होंने उसे कहा "क्रिसमस, यह तो बड़ी अच्छी बात है। " पर बेटा, इस इलाके में सात में से एक जन भी नहीं जो पढ़ना जानता हो।

कुछ महिने बाद क्रिसमस इवान्स को लड़खड़ाते हुए पवित्र शास्त्र पढ़ता देख लोगों को अचंभा हुआ। तब यह घोषणा करके उसने लोगों को और भी आश्चर्य में डाल दिया, "परमेश्वर ने मुझे प्रचार करने को बुलाया है।"

उसने अपने पादरी से हकलाते हुए पूछा, "श्रीमान, क्या आप मुझे पढ़ायेंगे?" सीखने की चाहत उसके भद्दे चेहरे पर चमक रही थी। पादरी सहमत हो गये और जवान क्रिसमस को छः महीने पढ़ाया। तब, उसकी जमापूंजी घट गई, जवान ने इंगलैंड की यात्रा करने का निर्णय किया। उसने पास्टर से कहा "मैं फसल की कटनी में मजदूरी करूँगा, और फिर से पढ़ने के लिये लौटूँगा।"

रास्ता में एक भीड़ ने घात लगाकर उसे पकड़ा और बुरी तरह पीटकर घायल किया और उसकी एक आंख जाती रही।

पर क्रिसमस इवान्स ने साहस नहीं छोड़ा। वह घर आया और कड़ी मेहनत से अपनी पढ़ाई जारी रखी। वह यूनानी, इब्रानी और इतालवी भाषा में पराँगत हो गया। उसने अपने आप को एक थका देने वाली भ्रमणशील सेवकाई में लगा दिया जिसमें घोड़ों या टमटम द्वारा उबड़-खाबड़ रास्तों पर हजारों मील दूर की यात्रा करनी पड़ती थी। उनकी पवित्र-आत्मा से भरी सेवकाई में हजारों वेल्स निवासियों ने ख्रीष्ट यीशु में उद्धार पाया।

उनको लोग सामान्यतः "वेल्स के जॉन बनियन " के नाम से जानते थे। उनके बीहड़ जंगलों की सेवकाई के

सत्य की परख

"क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जायेगा: और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनंतकाल का पिता, शांति का राज कुमार रखा जायेगा।" (यशाय्याह 9:6)

चौवनवे वर्ष में क्रिसमस इवान्स की मृत्यु हो गई। वे पुराने वेल्स का एक गाने का पद बार-बार दोहराते थे। जब कि वे अपने निर्धारित प्रचार स्थल से दूसरे पहाड़ी स्थल को जाते थे वे चिल्लाते थे, "अलविदा, गाड़ी आगे बढाओ!" और इस तरह से एक आंखवाले वेल्स के प्रेरित का अपने स्वर्गीय घर को प्रस्थान हुआ।

- चुना हुआ।

मोची और उसका अतिथि

एक क्रिसमस के दिन बूढा मोची अपनी छोटी सी दुकान पर, बाईबल में उन ज्ञानियों के बारे में पढ़ रहा था, जो भेंट लेकर नन्हे यीशु से मिलने आये थे। उसने अपने आप से कहा, 'यदि कल पहला क्रिसमस हो और आज रात यीशु का जन्म इस कस्बे में होना हो, तो मैं जानता हूँ कि मैं उन्हें क्या भेंट दूँगा।'

वह अपनी जगह से उठा और ताक पर दो नन्हे नर्म सफ़ेद चमड़े के जूते उठाए, उनमें चाँदी के चमकदार बक्कल लगे थे। 'मैं उसे यह दूँगा, मेरा सर्वोत्तम काम। उनकी माँ कितनी खुश होंगी। लेकिन मैं तो मुर्ख बूढा व्यक्ति हूँ। ' वह सोचते हुए मुस्कराया,' स्वामी को मेरी तुच्छ भेंट की कोई आवश्यकता नहीं।'

जूतों को वापस रखते हुए, उसने फूँक मार कर मोमबत्ती बुझाई और आराम करने के लिए चल पड़ा। उसने अभी अपनी आँखें बंद करी ही थी कि अपना नाम पुकारते एक आवाज़ सुनी। 'मारटिन।' तुमने मुझे देखने की इच्छा व्यक्त की है। कल मैं तुम्हारी खिड़की के पास से गुज़रूँगा। यदि तुम मुझे देखोगे अतिथि बन कर अंदर आऊँगा और तुम्हारे साथ भोजन की मेज़ पर बैठूँगा।'

खुशी के मारे रात भर वह सो नहीं सका। पौ फटने से पहले ही वह उठा और अपनी नन्हीं दुकान सँवारी। ताज़ी रेत उसने फ़र्श पर बिखेरी, देवदार की टहनी से धनुषाकार माला, कड़ी के चारों ओर बनवाई। मेज़ पर उसने सफ़ेद ब्रेड, शहद की बोतल, दूध की मटकी और आँच पर कॉफ़ी का बरतन टाँग दिया, उसकी साधारण तैयारी पूरी हो चुकी थी।

जब सब कुछ तैयार हो चुका था, उसने खिड़की पर चौकसी शुरू की। उसे पक्का विश्वास था कि यह अपने स्वामी (यीशु मसीह) को ज़रूर पहचान लेगा। बाहर गली में ओलों के साथ भारी वर्षा हो रही थी और काफ़ी ठंड पड़ रही थी, वह सोच रहा था कि वह कितना खुशी का मौक़ा होगा, जब वह अपने अतिथि के साथ बैठ कर रोटी बाँटेगा।

लेकिन अभी उसने बाहर देखा कि एक बूढा, गली साफ़ करने वाला, फूँक मार कर अपने गठीले हाथों को गर्म करने कि कोशिश करते हुए जा रहा था। 'बेचारा बूढा आदमी।' वह ज़रूर ठिठुर रहा होगा ', मारटिन ने सोचा। दरवाज़ा खोलते हुए उसने उसे पुकारा, ' अंदर आओ, मेरे मित्र एक गर्म कप काफ़ी पी कर अपने को गर्म करो।' और ज़्यादा जोर देने की ज़रूरत नहीं पड़ी और आदमी ने आभार प्रकट करते हुए निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

एक घंटा बीत गया और इस बार उसने एक गरीब महिला को दयनीय कपड़ों में एक बच्चे को उठाए देखा। वह दरवाज़े की आड़ में थोड़ा आराम पाने के लिए रुकी, वह थकी हुई थी। फुर्ती से मारटिन ने दरवाज़ा खोलकर उस स्त्री से कहा, 'अंदर आओ और अपने को गर्म करो, जब तक तुम यहाँ आराम करो, । ' तुम स्वस्थ नहीं लग रही? उसने पूछा।

'मैं अस्पताल जा रही हूँ, आशा है वे मुझे और मेरे बच्चे को दाख़िल कर लेंगे ' उसने बताया,' मेरा पति समुद्री यात्रा पर है और मैं बीमार हूँ, एक भी व्यक्ति नहीं जिसके पास जा सकूँ।'

'बेचारा बालक !' बूढ़े व्यक्ति ने कहा।' जब तक तुम यहाँ ठंड दूर कर रही हो साथ ही कुछ खा लो। नही ? पहले मुझे इस नन्हे बच्चे को एक कप दूध देने दो। अहा! कितना सुंदर और तेजस्वी यह नन्हा बालक है। तुमने इसे जूते क्यों नहीं पहनाए?'

'मेरे पास इसके लिए जूते नहीं हैं,' माँ ने गहरी साँस छोड़ी।

'तो यह इस सुंदर जोड़ी को पहनेगा जो मैंने कल ही तैयार की थी,' और मारटिन ने नरम नन्हे हिम समान श्वेत जूते, जो वह पिछली रात को देख रहा था, उतारे और नन्हे बालक के पैरों में पहना दिए। वे उसके पैरों में सही नाप के आये।

और कुछ ही देर में वह जवान माँ आभार प्रकट करते हुए वहाँ से चली गई और मारटिन फिर खिड़की के पास जाकर बैठ गया।

घंटों पर घंटे बीतते गये और कई ज़रूरतमंद लोगों ने इस बूढ़े मोची की थोड़ी सी सामग्री में भाग लिया, लेकिन अपेक्षित अतिथि नहीं आया।

अंत में जब रात हो गई, मारटिन भारी मन के साथ अपनी खाट पर लेट गया। 'वह तो केवल सपना ही था उसने गहरी साँस छोड़ी, ' मैंने विश्वास और आशा की थी, लेकिन वह (यीशु मसीह) नहीं आये। '

अचानक, उसकी थकी हुई आँखों को ऐसा लगा कि कमरा तेजमय प्रकाश से भर गया है और मोची ने दिव्य दर्शन में एक के बाद एक, गरीब गली साफ़ करने वाला, बीमार माँ और उसका बच्चा और वह सारे लोग जिनकी दिन भर उसने सहायता की थी। हरेक ने उसकी ओर मुस्कराते हुआ कहा, ' क्या तुमने मुझे नहीं देखा ? क्या में तुम्हारे साथ भोजन करने नहीं बैठा ?' और लुप्त हो गए।

दुबारा उसने शांत वातावरण में वह मीठी कोमल आवाज़ सुनी, पुराने वचन दोहराते हुए, जो कोई मेरे नाम में इन नन्हों को अपनाएगा मुझे अपनाता है। क्योंकि जब में भूखा था तुमने मुझे भोजन दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पीने का दिया, मैं अजनबी था और तुमने मुझे अंदर बुलाया। मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जितना तुमने इनमें मेरे एक भी भाइयों में से एक के लिए भी किया है, तुमने मेरे लिए किया है।

प्रिय पाठकों, यह त्यौहार (क्रिसमस) का समय ऐसा मौक़ा है कि हमे अपने कम भाग्यशाली भाईयों के साथ बाँटे, उसमे से जो परमेश्वर ने हमे दिया है। यह जरूरी नहीं कि कोई बहुत धनी होकर ही दूसरों के साथ बाँटे, बल्कि जो थोड़ा बहुत हमारे पास है उसे दूसरों के साथ बाँटे।

- चुना गया।